** अध्याय पंचम **

:*: " उपसंहार " :*:

मोहन राकेश एक प्रगतिशील कहानीकार थे। उन्होंने अपने साहित्य में सामाजिक समस्याओं को व्यापक रुप में उठाने का प्रयास किया है। उन्होंने वर्तमान समाज एवं परिवार के बदलते, टूटते, बनते-बिगडते सम्बंधों के अनेक पहलुओं पर लेखनी चलाई है। आधुनिक कहानी के विकास यात्रा में राकेश की कहानियों ने अपना विशिष्ट स्-थान बनाया है। राकेशजी ने स्वातंत्र्यता प्राप्ति के पहले से ही कहानी लेखन प्रारंभ किया था। उनकी प्रथम लिखी कहानी "नन्ही" है तो प्रथम प्रकाशित कहानी "भिक्षु" है। राकेश को बचपन से ही साहित्य के प्रति रुचि थी। उन्होंने अपने साहित्यिक जीवन में कुल छियासठ कहानियाँ लिखकर आधुनिक हिन्दी कहानी साहित्य को उज़ागर किया है। उन्होंने अपनी कहानियों में व्यक्ति समाज आत्मपीड़न आदि को अंकित किया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय में मैंने राकेश के व्यक्तित्व का लेखा-जोखा प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। राकेशजी का जन्म मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था। पिताजी वकील थे। उनके परिवार की आर्थिक परिस्थिति तनावपूर्ण थी। अभावग्रस्त और ऋणग्रसत परिस्थिति को दूर करने के लिए उन्होंने छात्रावस्था में ही "ट्यूशन" लेकर घर का खर्च चलाते और शिक्षा का भी खर्च निकालते थे। वे जिज्ञासु थे। पिताजी के मृत्यु के उपरान्त पूरे परिवार का बोझ राकेश पर ही था। राकेशजी अन्तर्विरोधी व्यक्तिमत्व के थे। वे जितने बाहर से सुखी थे उतने अन्दर से सुलगे हुये थे। अन्दर से जलते रहने वाले राकेश

बाहर से हमेशा उत्तेजित दिखाई देते थे। वे ईमानदार थे। जहाँ भी नौकरियाँ की बड़ी ईमानदारी से की। नौकरियाँ करते समय वहाँ का व्यवस्थापन अगर गैर दिखाया दिया, और अपने स्वाभिमान को अगर चोट पहुँची तो तुरन्त त्यागपत्र देकर निकल आते थे। राकेशजी ने अपने जीवन में ज़ादा महत्व लेखन को तदनंतर मित्रों को दिया था। राकेश अपने मित्रों से निष्टापूर्ण थे। जिस प्रकार राकेशजी ने अनेक नौकरियाँ स्वीकारी और त्याग पत्र दिया उसी प्रकार उन्होंने तीन विवाह भी किये थे। प्रथम दो विवाह असफल रहे और विवाह विच्छेद भी कर दिया था। राकेश को प्रथम दो विवाह से जादा चोट पहुँची थी । उन विवाहों से वे सुखी नहीं हो पाये। उसी कारण उनका जीवन बिखर गया था और वे एक अच्छे घर की तलाश में खोये थे। अन्त में उन्होंने अपना तिसरा विवाह अनीता से किया और अपना घर बसाया। इस विवाह से उन्हें सांसारिक सुख मिला ।

राकेश के व्यक्तित्व को बनाने में उनके माता-पिता और दादी माँ का सबसे ज़ादा योगदान था। उनके मन पर इन्हीं लोगों का प्रभाव था। इसी कारण उनपर अच्छे संस्कार हुए थे। इसी से वे अपने जीवन में आयी अनेक कठिन से कठिन परिस्थिति का सामना कर सके।

उनका जीवन बिखरा हुआ था, उनके जीवन में कुण्ठा, संत्रास, आत्मसंघर्ष, घुटन-टूटन, और अकेलापन था। उनका जीवन कटू और निर्मम यथार्थ को झेलते हुए बीता, अस्थिर और अव्यवस्थित भी रहा। उनके जीवन में निराशा और पीड़ा ही पीड़ा भरी हुयी थी ।

द्वितीय अध्याय में राकेश के साहित्यिक कृतित्व का संक्षेप में विवरण किया है। राकेशजी आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य के एक सशक्त एवं जाने-माने कलाकार थे। उन्होंने विविध प्रकार का साहित्य लिखकर हिन्दी गद्य साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने अपने

साहित्यिक जीवन में कहानीकार नाटककार और उपन्यासकार की उपाधी हासिल की थी। साथ-साथ उन्होंने जीवनी, एकांकी, यात्रा वर्णन, निबंध ही लिखे थे और एक सफल अनुवादक भी थे।

उनके तीन महत्वपूर्ण उपन्यास है। "अंधेरे बंद कमरे" इस उपन्यास में उन्होंने आधुनिक जीवन की विसंगतियों और कठिनाइयों को प्रस्तुत किया है। इस में घुटती, तड़पती, संत्रास, कुण्ठाग्रस्त आत्माओं की दारुण स्थिति का चित्रण किया है। जीवन के गहरे यथार्थ को प्रकट करने का प्रयास किया है। यह उपन्यास मध्यवर्गीय जीवन और शिक्षित पति-पत्नी की समस्याओं तथा विषम मानसिक दशाओं के वैचारिक स्तरपर आधारित है। लेखक ने इस उपन्यास में महानगरीय जीवन पर भी प्रकाश डाला है।

दूसरा उपन्यास "न आनेवाला कल" में वर्तमान कालीन शिक्षा व्यवस्था तथा स्कूल के दमघोटू वातावरण आदि पर तीखा व्यंग्य किया है। इस उपन्यास में आम-तौर पर शैक्षिक संस्थाओं की कमजोरियाँ तथा वहाँ के लोगों की स्वार्थपरता के विचित्र रुपों पर प्रकाश डाला है। मन की रिक्तता एवं उद्देश्य हीन जीवन यात्रा के कारणों को खोजने का प्रयास इसमें दिखाई देता है। इस में अध्यापक मनोज के स्वाभिमान को चित्रित किया है और दुःख मय दम्पति जीवन को उजागर किया है।

तीसरा उपन्यास "अन्तराल" में स्त्री-पुरुष के बीच के अन्तराल को स्पष्ट किया है और अनेक समस्याओं में उलझकर रह जाने की आन्तरिक पीड़ा को प्रकट किया है। यह उपन्यास मानव सम्बंधों की विवेचना का उपन्यास है। इस उपन्यास में स्त्री-पुरुष दोनों हमेशा-हमेशा के लिए एक दूसरे के नहीं हो सकते और दोनों के बीच का अन्तराल नहीं मिट जाता।

मोहन राकेश के तीनों उपन्यासों में आत्मीय सम्बंधों का अन्वेषण है। उनके उपन्यास विचार प्रणाली से विकासात्मक है और यह विकास स्थूल से सूक्ष्म की ओर अग्रेसित है।

आधुनिक नाटक के मसीहा इस नाम से मोहन राकेश को पहचाना जाता है। उन्होंने तीन महत्वपूर्ण नाटक लिखाकर अपना नाम उजागर किया है "आषाढ़ का एक दिन" ऐतिहासिक पृष्ठभूमिपर लिखा गया राकेश का प्रथम नाटक है । प्रस्तुत नाटक कल्पना प्रधान, समस्या परक है। इसमें मानव मन की आशा अकांक्षाओं और समय के द्वन्द्व को प्रस्तुत किया है और अनेक समस्याओं के साथ विभिन्न आयामों को छूने का प्रयास भी किया है।

"लहरों का राजहंस" यह भी ऐतिहासिक नाटक है। इस नाटक की मूल संवेदना आधुनिक बोध से परिपोषित है। इस नाटक में आधुनिक मानवता की नियति की खोज और स्त्री-पुरुषों के आन्तरिक सम्बंधों को अभिव्यक्त किया है।

"आधे-अधूरे" यह सामाजिक नाटक है। इस में अनिश्चित अनिर्णय, और अस्थिरता का शिकार बने परिवार का चित्रण है । सभी पात्र मानसिक दृष्टिसे अस्वस्थ है। अपने आप में आधे-अधूरे है। दूसरों को दोषी मानकर स्वयं दुःखी है, बेचैन है। अंत में आधे-अधूरे में घर की तलाश है जो ऐसे घर की जो अपनी अर्थवत्ता को सार्थक बनाये ।

अंत में राकेश के दो ऐतिहासिक और एक सामाजिक नाटक अद्वितीय स्थान के अधिकारी है ।

उपन्यास और नाटक के साथ-साथ राकेशजी ने कहानियाँ भी लिखी है। राकेशजी की कहानियाँ समकालिन जीवन के सुख दुखद प्रसंगों, जीवन की ऊब, अकेलापन, उदासी का चित्रण जितनी बारकाईयों से किया है उतने ही बारकाई से मानव सम्बंधों की कटुता त्रासदी, बनते-बिगड़ते संबंध, अकेलापन, घुटन, कुण्ठा आदि का भी चित्रण किया है ।

राकेशजी ने अपने साहित्यिक जीवन में विभिन्न प्रकार का साहित्य लिखा था। उसमें दो एकांकी, यात्रावर्णन, संस्मरण, निबंध, कविता भी लिखी है साथ साथ अनुवादक भी थे। उनकी अनुदित कृतियाँ दो है। यह सभी साहित्य प्रकाशित है।

मोहन राकेश के साहित्य में जिन्दगी का जो रुप चित्रित है वह काल्पनिक नहीं है बल्कि वास्तविक स्थिति का यथार्थ चित्रण है। जिस प्रकार मानवीय संबंधों को देखा, भोगा, उसी प्रकार उन्होंने साहित्य में चित्रण किया। इसलिए राकेशजी का साहित्य समाज का दर्पण है। जो भी साहित्य लिखा है भोगे यथार्थ को सामने रखकर लिखा है। राकेश के व्यक्तित्व और कृतित्व को अलग,अलग करके देखा नहीं जा सकता। इसके बारे में डॉ॰ शारेशचंद्र चुलकीमठजी का कहना है कि "राकेश को व्यक्ति के रुप में मात्र महान मानकर उनके साहित्यिक व्यक्तित्व को भूला देना और उसी प्रकार व्यक्ति के रुप में कमज़ोर तथा घटिया करार देकर साहित्यिक रुप में महान सिध्द करना उनके साथ घोर अन्याय है ।"[१]

---

* संदर्भ :

१] मोहन राकेश का साहित्य : समग्र मूल्यांकन = डॉ॰ शारेशचंद्र - चुलकीमठ
प्रथम संस्करण १९८९
पृ॰ २३४॰

तृतीय अध्याय में मोहन राकेश की कहानियों की तत्वों के आधार पर समीक्षा करने का प्रयास किया है। डॉ॰ सुषमा अग्रवाल मानती है कि; "सचमुच राकेश की कहानी यात्रा एक समर्पित लेखक की ऐसी यात्रा है जिस में यथार्थ के धरातल पर और समय के सत्य को पकड़ने की सफल कोशिश दिखाई देती है।"

राकेश के कहानियों की कथावस्तु अधिक तर मध्यवर्गीय जीवन में जीने वाले लोगों पर आधारित है। अपवाद के रूप में कुछ कहानियाँ उच्चवर्गीय जीवन पर है। राकेशजी ने अपने कहानियों में परिवार, महानगर, मध्यवर्ग, मजदूर वर्ग, शिक्षित वर्ग, ग्राम जीवन आदि को महत्व देकर अपनी कहानियों के विषय मात्र बनाये है। कई कहानियों में पात्रों के चरित्र-चित्रण पर ध्यान दिया गया है। वहाँ कथावस्तु उतनी महत्वपूर्ण नहीं रही है। उन्होंने अपनी कहानियों में प्राय: ऐसे कथानकों का प्रयोग किया है जिन में वस्तुगत विभिन्नता होते हुए भी सामाजिक यथार्थ का निरुपण विस्तृत स्तर पर हुआ है, जिन में समसामयिक समस्याओं को जीवन्त रूप में उभारा गया है, जो सामाजिकता को अपेक्षा आत्मपरकता से अधिक ओत-प्रोत है, कुण्ठाग्रस्त स्थितियाँ एवं संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का चित्रण अधिक हुआ है।

राकेशजी ने अपनी कहानियों में ऐसे पात्रों को चुना है जो कुण्ठाग्रस्त, शारीरिक हीनता, वैयक्तिक रुचियों के कारण मनस्ताप के शिकार हो गये है, जिन में संघर्ष करने का सामर्थ्य है, लेकिन निर्णय लेने की क्षमता नहीं है। मानसिक उद्वेलन, तनाव एवं अन्तर्द्वन्द्व से भरे हुये है। ऐसे पात्रों के चरित्र-चित्रण पर राकेशजी ने प्रकाश डाला है। कहानियों में वातावरण निर्माण के लिए प्राकृतिक शक्ति का

अधिक प्रयोग किया है। लेखन में प्राय: प्रतीकों एवं बिम्बों के माध्यम से व्यापक वातावरण का निर्माण किया है। साथ-साथ भौतिक वातावरण की अपेक्षा मानसिक वातावरण की सृष्टि अधिक की है। राकेशजी ने विविध रचना शैलियों का स्वतंत्र प्रयोग तो बहुत कम मात्रा में किया है परन्तु रचना शैलियों का सम्मिश्रण कर के कहानियों की रचना की है। कहानियों की भाषा सहज एवं प्रवाहमयी है। राकेश नाटककार होने के कारण पात्रों के सं-भाषण में नाटकीय लहजा दिखाई देती है। भाषा में रोज के व्यवहार में बोली जानेवाली भाषा का प्रभाव है या बोलचाल की स्वाभाविकता है सांकेतिकता से परिपूर्ण है। आंचलिकता के माधुर्यगुण है, अदृश्य एवं अभूर्त की भाषा व्यक्ति के लिए प्रतीकों का सहारा लेकर चली है। जनभाषा एवं विदेशी भाषाओं का प्रयोग, लोकोक्ति एवं मुहावरों का प्रयोग कर के राकेशजी ने भाषा को सजग बनाया है।

संवादों की ओर नज़र डाली तो यह दिखाई देता है कि संवाद सहज और सरलता से परिपूर्ण है। उनमें वास्तविकता दिखाई देती है, सांकेतिकता और लाक्षणिकता भरी हुयी है। संवाद वास्तव लगते हैं। तोतली बोलियों के संवादों को अपनाकर वास्तविकता को दिखाया है। संवाद सहज संवेदनाओं के द्योतक है, पात्रानुकूल है जो कथावस्तु के विकास में सहायत्ता पहुँचाते है। उद्देश्य में अनेकता नज़र आती है पर उस में एकता है। राकेश ने समसामयिक यथार्थ के व्यापक सामाजिक स्तर पर कहानियों के प्रस्तुत करने की कोशिश की है। सामाजिक दायित्व की भावना से प्रेरित होकर अपने परिवेश की समस्याओं को जीवन्त रुप में उभारा है। तो मुख्य रुप में राकेश की कहानियों का उद्देश्य मानवीय सम्बंध और मध्यवर्गीय जीवन के यथार्थ रुप को प्रस्तुत करने का है।

चतुर्थ अध्याय में राकेश की कहानियों में चित्रित सामाजिक समस्याओं को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इस अध्याय में मैंने सामाजिक समस्याओं को विस्तृत रुप से प्रस्तुत किया हैं । राकेशजी ने अपनी कहानियों में शोषित वर्ग के प्रति गहरी आस्था एवं सहानुभूति रखाते हुए धर्म के नाम पर चलनेवाले पाखण्ड व्यवहार, अडंबर और स्वार्थीवृतियों का पर्दा फाश किया है। उनकी कहानियों में जो व्यंगात्मकता मिलती है, वस्तुत: वह प्रगतिशील चेतना के स्तर पर ही हैं।

राकेशजी ने अपनी कहानियों में सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक और महानगरीय समस्याओं को बड़ी आस्था से चित्रित किया है। समाज में होने वाले बदलाव का वास्तविक चित्रण राकेशजी ने अपनी कहानियों में किया है।

उनकी कहानियों में निम्नांकित समस्याएँ दृष्टिगोचर हुई है -

१] सामाजिक समस्याएँ :

क] परिवारिक समस्या·
ख] अनमेल विवाह या पति-पत्नी के बनते बिगड़ते संबंध
ग] रिश्तों का खोखलापन घ] तलाक समस्या
च] अकेलापन या खालीपन
छ] विधवा समस्या

२] आर्थिक समस्या :

३] राजनैतिक समस्या :

४] धार्मिक समस्या :

५] शिक्षा समस्या :

६] महानगरीय समस्या :

उपर्युक्त सभी समस्याएँ राकेशजी की कहानियों में दिखाई देती है।

पंचम अध्याय "उपसंहार" का है जिस में प्रबंध के अध्यायों के जो निष्कर्ष मिले है उनको प्रस्तुत किया है।

राकेशजी एक प्रतिभावान कहानीकार थे। समाज को उन्होंने नज़दिक से परखा है मध्यवर्गीय जीवन को उन्होंने विशेष महत्व दिया है।

अंत में मोहन राकेश जिस प्रकार प्रतिभाशाली कहानीकार थे उसी प्रकार एक सामाजिक समस्या प्रधान कहानीकार भी थे।

00 *÷*÷*÷*÷× 00